मई–जून 2021

ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

मोरंगो

बाल पत्रिका

इस बार

खेल खिलाड़ी

5 जीत हो या हार कोई फर्क नहीं पड़ता

उड़ान

7 मेरी गुड़िया / बिल्ली

8 खेतों की शान

9 जादुई किताब

10 लाली का बीज

11 खेती में घाटा

ज्ञान विज्ञान

12 समझ

13 कुत्ते रात में क्यों रोते हैं?

जोड़–तोड़

14 जहाँ चाह वहाँ राह

कलाकारी

17 खेल / क्लब में कला

बात लै चीत ले

18 हार की जीत

22 माथापच्ची / हीहीही–ठीठीठी

23 कुछ हमने बढ़ायी, कुछ तुम बढ़ाओ

निकिता मीना,
उम्र–12 वर्ष,
समूह–संगम

सम्पादन : विष्णु गोपाल

सहयोग : उदय पाठशालाओं के बच्चे व शिक्षक

डिज़ाइन : अश्विनी कुमार पंकज

प्रूफ़ : सुरेश चंद

वितरण : लोकेश राठौर

आवरण चित्र : **अंकिता मीना**, उम्र–12 वर्ष, समूह–संगम

वर्ष 12 अंक 129–130

मोरंगे' का प्रकाशन यात्रा फाउण्डेशन–आस्ट्रेलिया, आशा फोर एज्यूकेशन, पोर्टिकस–नीदरलेण्ड, व एच.टी. पारेख के सहयोग से हो रहा है।

प्रबंधन
शुभम गर्ग
निदेशक,
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
रणथम्भौर रोड़, सवाई माधोपुर
(राजस्थान) 322001
फोन : 07462–220957
फेक्स : 07462–220460

परिचय

मीनाक्षी सैनी, उम्र–12 वर्ष, समूह–सितारा

'ग्रामीण शिक्षा केन्द्र' राजस्थान राज्य के सवाई माधोपुर जिले में स्थित एक गैर–सरकारी (निजी) संस्था है। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र का जन्म 1996 में हुआ था और इसका पंजीकरण 'राजस्थान सोसाइटी अधिनियम–1958' के तहत एक संस्था के रूप में किया गया। जी.एस.के. को संस्थागत बनाने का विचार समुदाय की मांग से उभरा ताकि क्षेत्र की आगामी पीढ़ी जीवन में आजीविका जैसी आवश्यक क्षमताओं और जीवन की कठिनाइयों में निष्पक्ष रूप से स्वस्थ निर्णय लेने में सफल रहे। सामूहिक रूप से हमने रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस–पास रहने वाले बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए स्कूल शिक्षा कार्यक्रम शुरू करने के बारे में सोचा।

हमने अपना पहला प्रयास और अपनी पहली स्कूली यात्रा की शुरुआत वर्ष 2004 में गाँव–जगनपुरा (खवा) में बबूल के पेड़ के नीचे से की। गाँवों के बच्चों और समुदाय के सहयोग से उदय सामुदायिक विद्यालय की शुरुआत हुई। गाँव वालों ने अपनी जमीन, फसल, श्रम, समय, पैसा और अपने अनुभव से विद्यालय को आगे

बढ़ाया। इसके पश्चात 2007 में बोदल गाँव में, 2009 में फरिया गाँव में और 2014 में गिरिराजपुरा गाँव में उदय सामुदायिक पाठशाला सफलतापूर्वक शुरुआत की गई। ये तीनों उदय पाठशाला रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान की परिधि पर स्थित है। राष्ट्रीय उद्यान में जानवरों, पक्षियों और सरिसृपों की एक विशाल विविधता शामिल है। जिसमें से बाघ सबसे अधिक प्रचलित है। वन्यजीवन का संबंध इन बच्चों और रहने वाले समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण घटक है, जो इनके रहन–सहन, खान–पान, आजीविका, संस्कृति, रीति–रिवाज, बोली–भाषा और व्यवहार के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। जिसमें इनकी सैंकड़ों पीढियों का ज्ञान, कौशल और अनुभवों का एक विशाल भंडार है। इतने समृद्ध ज्ञान की अनदेखी कर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का दावा करना खोखला साबित होगा। अतः ग्रामीण शिक्षा केन्द्र इनके इसी ज्ञान और परिवेशीय अनुभवों को आधार बनाकर भावी शिक्षा से जोड़ने का प्रयास कर ही रही है।

क्षेत्र में हम पूर्व–प्राथमिक, प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय शिक्षा में काम कर रहे हैं। पिछले वर्षों में 'उदय सामुदायिक पाठशाला' रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस–पास के सीमांत समुदाय और उनके बच्चों के लिए गुणवत्ता शिक्षा के क्षेत्र में जाना माना नाम बन गया है। स्कूलों ने खुद को समुदायों द्वारा स्वीकृत और सराहनीय गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केन्द्रों के रूप में प्रदर्शित किया है। इस मॉडल ने समुदायों को राजकीय विद्यालयों से समान गुणवत्ता की शिक्षा की कल्पना करने और मांगने के लिए प्रोत्साहित किया।

मॉडल को आगे बढ़ाते हुए वर्तमान में हमारे आउटरिच कार्यक्रम – 'विस्तार' को रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आसपास स्थिति गाँवों में वर्ष–2011 में 70 राजकीय विद्यालयों में शुरू किया गया। इसी माध्यम से हम समुदायों, सरकार, शिक्षाविदों, अन्य संगठनों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के पहलुओं को बढ़ावा देने, सीखने और समझने में मदद कर रहे हैं और नई शिक्षा पद्धति की जड़े मजबूत करके उन्हें फैलाने की कोशिश कर रहे हैं। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र द्वारा समर्थित उदय पाठशालाओं को शिक्षा में योगदान के लिए राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया जा चुका है। हमारा हर कदम संस्था के विजन और मिशन की तरफ बढ़ रहा है।

इसी कड़ी में एक प्रयास, बच्चों की रचनात्मक, कलात्मक क्षमता और कौशलों को बढ़ावा देने हेतु बाल पत्रिका 'मोरंगे' का सफलतापूर्वक प्रकाषन किया जा रहा है। बाल पत्रिका मोरंगे बच्चों के काम को व्यापक समुदाय तक पहुँचाने और उनसे जुड़ने का मंच प्रदान करती है। हमारे पाठकों और समर्थकों का सहयोग और जुड़ाव हमें लगातार प्रयास करने के लिए प्रेरित करता है।

धन्यवाद।

जीत हो या हार कोई फर्क नहीं पड़ता

मैं चौथ का बरवाड़ा के सरकारी स्कूल में पढ़ता था। हमारी स्कूल में हैण्डबॉल खेल की शुरूआत हुई थी। वहाँ पर ज्यादातर बास्केटबॉल व फुटबॉल के ही खेल खेले जाते थे। उन खेलों में मुझे खेलने का अवसर नहीं मिला। क्योंकि मेरी खेलों में रूचि नहीं थी। मैं ज्यादातर क्रिकेट खेलना पसंद करता था। मेरे माँ–बाप भी खेलों को खराब मानते थे। क्योंकि उनकी इन पर समझ नहीं थी, वो पढ़े लिखे कम ही थे। उनकी सोच थी कि खेलों में क्या रखा है? पढ़ेगा–लिखेगा तो जीवन में काम आयेगा। बचपन में दोस्तों के साथ क्रिकेट खेलने जाता तो वापिस आने पर बच्चे मेरे साथ लड़ाई–झगड़ा करते थे। लेकिन फिर भी मैं खेलने जाता था। क्योंकि मुझे खेलना अच्छा लगता था।

लखराज मीना, उम्र–11 वर्ष,
उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

मैं कक्षा 12वीं में पढ़ता था तो मेरे साथ रहने वाले दोस्तों ने हैण्डबॉल खेल की प्रतियोगिता के लिए मेरा नाम लिखवा दिया। हम सभी शिक्षक के साथ सुबह–शाम मैदान पर हैण्डबॉल खेलने लगे। इस खेल को खेलने में मुझे बड़ा आनन्द आने लगा। हम सभी इस खेल को अच्छा खेलने लग गये। हमारे शिक्षक भी हमसे कहने लगे कि तुम अबकी बार पूरे जिले में प्रथम स्थान हासिल करोगे। शाम को हम सभी दोस्त बाजार में कोई स्थान देखकर वहाँ बैठते और जो हमने खेला उस पर चर्चा करते। सभी एक–दूसरे को अपनी कमी बताते। इससे हमारे खेल में बहुत परिवर्तन आ गया।

अब हमारी जिला स्तरीय प्रतियोगिता नजदीक आ गई थी। हमारी हैण्डबॉल की

प्रतियोगिता सवाई माधोपुर में हाऊसिंग बोर्ड के स्काउट मैदान पर हुई। हम सभी मैचों को जीतते हुए फाइनल में जा पहुँचे। फाइनल में हमारा मैच बहतेड़ (मलारना डूंगर) से था जो हर साल हैण्डबॉल की प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर आती थी। हमें भी इसका पता था और हम चिंतित भी थे। मैंने भी अब तक जितने मैच खेले थे उसमें बहुत अच्छा प्रदर्शन किया था। हमारी टीम में हम 2–3 खिलाड़ी ही थे जिनकी बदौलत टीम फाइनल में पहुँची थी। हम सबको फाइनल मैच की चिंता हो रही थी। हम सोच रहे थे कि हम मैच जीतेंगे या नहीं। लेकिन हमारे शिक्षक हमको हिम्मत दे रहे थे कि जीत हो या हार कोई फर्क नहीं पड़ता। ये प्रतियोता हमारी पहली ही प्रतियोगिता थी। सभी हमें शाबासी दे रहे थे कि आपके बच्चों ने कमाल का खेल दिखाया है।

अगले दिन हमारा फाइनल मैच हुआ। जिसमें विपक्षी टीम को पता चल गया कि जितने भी मैच हुए उनमें इन तीन लड़कों ने ही स्कोर किया है। तो उन्होंने हमें रोकने की योजना बना ली। उन्होंने हम तीनों की घेराबंदी कर दी। जिससे हम खुलकर खेल नहीं पाये और हम 10–5 से यह मैच हार गये। लेकिन देखने वालों ने हमारी खूब प्रशंसा की थी। क्योंकि विपक्षी टीम के ज्यादातार खिलाड़ी राज्य स्तर पर खेल चुके थे। इसके बाद हमारी टीम से दो खिलाड़ी का राज्य स्तर पर चयन हुआ जिसमें एक मेरा भी नाम था। लेकिन दो दिन बाद मुझे पता चला कि मेरा नाम काट दिया गया और मेरी जगह दूसरे का नाम लिख लिया गया है। यह लड़का किसी भी मैच में मैदान में नहीं खेला था। उसके पिताजी शिक्षा विभाग में बाबू थे और उनकी अधिकारियों से अच्छी जानकारी थी जिसके कारण उस लड़के का चयन मुझे हटा कर कर लिया गया। मेरे पिताजी एक किसान थे उनकी किसी से कोई जानकारी नहीं थी। सरकारी शिक्षकों ने मुझसे कहा कि क्या करेगा वहाँ जाकर।

मैं भी चार–पाँच दिन जानकारी के लिए चक्कर काटने लगा लेकिन कोई कामयाबी नहीं मिली। मैंने समझा कि इस सिस्टम में बहुत खराबी है। सिस्टम की खराबी के कारण अच्छे खिलाड़ी रह जाते हैं व जो कुछ नहीं जानते वो आगे तक बिना खेले ही राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं के सर्टीफिकेट ले जाते हैं। मैंने भी हार नहीं मानी। मैंने सोचा कि मुझे राज्य स्तर खेलकर आना है चाहे मैं ओपन से ही क्यों न खेलूं। फिर संयोग ऐसा हुआ कि मैं सीकर में ओपन स्टेट चैम्पियनशीप में खेलने गया। वहाँ मैंने पाँच मैच खेले थे। अब मैं हर साल इस प्रतियोगिता में जाने लगा।

शैलेन्द्र सिंह राजावत, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

मेरी गुड़िया

मेरी गुड़िया करे मनमानी
पहने साड़ी बने सयानी
सबका मन बहलाती है
सबसे अच्छी लगती है
प्यारी–प्यारी सबसे न्यारी
लगती वह बड़ी सयानी
पहने कुर्ती और पजामा
ठुमक–ठुमक कर गाती गाना
अपना दम दिखाती है
सेब, संतरा खाती है
फिर मोटी हो जाती है।

मनीषा सैनी,
उम्र–13 वर्ष, समूह–उजाला

बिल्ली

बिल्ली मौसी गई बाजार
वहाँ से लाई आलू चार
दो आलू गिर पड़े
आपस में वो लड़ पड़े।
बिल्ली का अब फोन आया
पापा जी ने उसे बुलाया
बिल्ली मौसी को अब ना था वक्त
कैसे करती वो आलुओं को सतर्क
वहाँ पे आई मोटर कार
आलू भागे बार–बार
बिल्ली की गोद में जाकर बैठे
बिल्ली को अब सॉरी बोले।

दीपिका मीना, उम्र–12 वर्ष,
कक्षा–8, उदय सामुदायिक पाठशाला
जगनपुरा।

अंकित मीना,
उम्र–12 वर्ष,
समूह–सितारा

खेतों की शान

तुमको मैं एक बात बताऊँ
एक आदमी से तुम्हे मिलाऊँ
खेतों की वह आन है
देश की वह शान है
जिसे हम कहते किसान हैं
अनाज का वो है करता–धरता
इससे सबका पेट है भरता
मेहनत करके चलाता हल
धूप में सिकता है पल पल
फिर बाजार से बीज है लाता
खेतों को बीजों से सजाता
बारिश की वह राह देखता
बादल उस पर पानी फेंके
उसकी मेहनत रंग भी लाये
बीजों ने फिर पंख फैलाये
बीज हुए उसके अंकुरित

किसान हो गया फिर संतुलित
मन में वह अनुमान लगाता
कैसी होगी फसल ये मेरी
खाली ना रह जाए बोरी मेरी
बनी रहे खेतों की षान
वो खेतों पर देता ध्यान
उम्मीद कभी ना उसकी टूटी
पकी फसल खेत लहराये
फसल की वो करे कटाई
घर घर में बो बांटे मिठाई
थोड़ी फसल वो घर में लाता
बाकी सारी बेच के आता
चार पैसे हाथ में लाता
उससे अपना घर चलाता
खेतों की आन बान शान
बड़ा मेहनती मेरा किसान।

आरती, कक्षा 7

दीपिका मीना, उम्र–12 वर्ष, समूह–सितारा

जादुई किताब

अंजली मीना, कक्षा–7, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

एक गाँव था। उस गाँव का पालन–पोषण सूर्या राजा करता था। उस गाँव में एक लड़का था। वह लड़का सरकारी स्कूल में पढ़ने जाता था। परन्तु वह पढ़ता नहीं था। एक दिन उसकी किताब पढ़ने की इच्छा हुई। उसे एक चमकीली किताब दिखाई दी। उसने उस किताब को खोलकर देखा तो उसमें लिखा था। बाहर एक पेन है। उसे उठाकर अपने दोस्त को दो। तो वह दौड़कर बाहर आया। उसने पेन उठाया और अपने दोस्त को दिया। एक दिन और उसने वही किताब खोली। उसमें लिखा था दूसरे देश के दुश्मन समुद्र के रास्ते आ रहे हैं। वह राजा के दरबार में गया और उसने राजा से कहा महाराज दूसरे देश के दुश्मन समुद्र के रास्ते आ रहे हैं। राजा ने कहा, मैं तुम पर कैसे विश्वास करू? उसने कहा महाराज मैं भविष्य का पहले पता लगा लेता हूँ। राजा ने उसके साथ अपने सिपाही भेजे। उन्होंने देखा कि दुश्मन तो आ रहे हैं। राजा ने और उसके सैनिकों ने तीर चलाये जिससे दुश्मन डरकर वापस चले गये। राजा ने उस लड़के को बहुत सारे रूपये ईनाम में दिये। उस लड़के के लालच आ गया। वह बहुत से लोगों का भविष्य बताने लगा और उनसे रूपये लेने लगा।

एक दिन उसने किताब में पढ़ा कि उसके माता–पिता एक एक्सीडेंट में मर जायेंगे। उसके माता–पिता कार में बैठकर कहीं जा रहे थे। उस लड़के ने उन्हें रोकने की बहुत कोशिश की। परन्तु उसके माता–पिता नहीं माने और चले गये। वह कार के पीछे दौड़ने लगा। वह रूक गया और एक पेड़ के नीचे बैठकर रोने लगा। वहाँ पर एक महात्मा आया। महात्मा ने लड़के से पूछा, ''क्यों रो रहा है?'' उसने सब कुछ बता दिया। महात्मा ने कहा, ''तुम्हारे पास जो किताब है उसे जला देना और जो पैसे तुमने लिये हैं उन्हें गरीबों में बांट देना।'' उसने किताब को जला दिया और सारे रूपये गरीबों में बांट दिये। शाम को उसके माता–पिता वापस आ गये वह उन्हें देखकर बहुत खुश हुआ।

आकाश गुर्जर, समूह–उजाला, उम्र–13 वर्ष

लाली का बीज

एक लड़की थी उसका नाम लाली था। वह खेल रही थी। वहाँ उसे एक बीज दिखाई दिया। लाली बीज को उठाकर अपनी मम्मी को दिखाने लगी। फिर मम्मी ने कहा कि इसे हम दोनों गड्डा खोदकर गाढ़ देते हैं। उन्होंने एक जगह पर बीज को गाढ़ दिया। लाली रोज जाकर देखती की पौधा उगा या नहीं। पर अभी कुछ नहीं उगा था।

एक दिन लाली पानी की बाल्टी लेकर गई तो देखा कि बीज एक पौधा बन गया है। फिर उसने पानी डाला और चली गई। फिर रोज उसमें पानी डालने लगी। धीरे–धीरे वह पौधा बड़ा हो गया और उस पर पक्षी भी मंडराने लगे। कुछ दिन बाद पौधा पेड़ बन गया और वहाँ पर बच्चे बैठकर पढ़ने लगे, आदमी बैठने लगे।

मिनाक्षी बैरवा, उम्र–13 वर्ष, समूह–सूरज

एक दिन पेड़ में आम आते दिखाई दिए तब लाली को पता चला कि ये आम का पेड़ है। अब लाली आम खाती और सभी बच्चों को भी देती। सभी बच्चे आम खाते और एक–एक करके गुठली को गढ़्डा खोदकर गाड़ देते। इस तरह लाली के बीज से धीरे–धीरे बहुत सारे पौधे लगने लगे। कुछ दिन बाद वे पौधे भी पेड़ बन गये। अब बच्चे वहाँ पर खेलते रहते थे। चारों ओर हरियाली फैल गई और पेड़ों में आम आ गए। बच्चे उन पर खेलने लग गये और लाली रोज वहाँ बच्चों के साथ खेलती।

दीक्षा मीना, समूह–सितारा, उम्र–13 वर्ष

शीतल,
उम्र–12 वर्ष,
समूह–सूरज

खेती में घाटा

एक बार की बात है। एक गाँव था। उस गाँव में एक किसान रहता था। उस किसान का नाम रामू था। रामू के पास एक बैल था। वह बैल आलसी था। रामू जब खेती का काम करता तो वह उस बैल को काम में लेता था। पर वह बैल रामू का कहा नहीं मानता था। एक दिन रामू के दिमाग में एक तरकीब आई। उसने सोचा एक तो यह बैल काम नहीं करता उपर से खेती में बचता भी कुछ नहीं। फसल आते आते इतनी उधार हो जाती है कि सारा पैसा उधार चुकाने में ही चला जाता है। इसलिए उसने उस बैल को बेच दिया और एक भैंस ले आया। रामू उसका दूध निकाल कर बेच आता था। ऐसे ही उसका काम चलता रहा। कुछ समय बाद भैंस का दूध कम होने लगा और फिर भैंस ने दूध देना बंद कर दिया।

कुछ दिनों बाद भैंस ने फिर एक बछड़ी को जन्म दिया। बछड़ी को जन्म देने के बाद भैंस फिर से दूध देने लगी। रामू की फिर से मौज हो गई। अब वह अमीर हो गया।

एक दिन एक साँप ने रामू की भैंस को डस लिया। उसकी भैंस मर गई। इस बात का रामू को बहुत दुःख हुआ। परन्तु रामू के पास मरने वाली भैंस की दो पाड़ियां (बछड़ियाँ) थी। इसलिए अब वे दूध देने लगी थी। इस तरह रामू को कभी कोई दिक्कत नहीं आई।

विक्रम गुर्जर, समूह–झरना, उम्र–9 वर्ष

समझ

मैं कक्षा 4 में पढ़ता था। मुझे यह नहीं पता था कि अण्डे कौनसे पक्षी या जीव–जन्तु देते हैं और बच्चे कौनसे जीव–जन्तु देते हैं। एक बार शैलेन्द्र गुरूजी ने ब्लेक बोर्ड पर समझाया था कि ये पक्षी अण्डे देते हैं और ये जन्तु बच्चे देते हैं। षुरू में तो कुछ भी समझ नहीं आया। मैंने उनको समझने का प्रयास किया और हिम्मत नहीं हारी। गाँव में देखता था कि जिन जन्तुओं के बाहर कान होते हैं वे बच्चे देते हैं और जिनके कान बाहर नहीं होते हैं वे अण्डे देते हैं। मैंने 10–12 लोगों से पूछा भी कि चमगादड़ क्या देती है? तो उन्होंने नहीं बताया। मैंने पूछा भालू क्या देता है? तो भी उन्होंने नहीं बताया। फिर मैंने बताया कि चमगादड़ और भालू बच्चे देते है। मेरी समझ बन गई कि कौनसे जन्तु अण्डे देते हैं और कौनसे जन्तु बच्चे देते हैं। मैंने मेहनत की और अपने आस–पास की चीजों से गुरूजी की बातों को समझने लगा तो मैं सीख गया।

विजय सिंह गुर्जर, समूह–झरना, उम्र–10 वर्ष

कुत्ते रात में क्यों रोते हैं?

कुत्तों को लोग एक वफादार जानवर मानते हैं। कुत्ता जिसकी रोटी खाता है उसके गुणगान करता है। पालतु कुत्ता तो मनुष्य की आवाज को पहचान कर उसके पास आ जाता है। कुत्ता घर की रखवाली भी करता है। पालतु कुत्ता मनुष्य की तरह समझता है। अगर बाहर से अनजान व्यक्ति या जानवर आ जाये तो वह भौंकने लगता है और जानने वाले व्यक्ति के पास आकर पूँछ हिलाता है।

प्रियंका मीना,
उम्र–12 वर्ष,
समूह–सितारा

जब कुत्ता रोने के जैसी आवाज निकालता है तो उसे लोग अपशगुन मानते हैं। कुत्ते ज्यादातर रात के समय रोते हैं। कई लोग कुत्ते के रोने की आवाज सुनकर कहते हैं कि आज मौहल्ले में जरूर किसी की मृत्यु होगी।

परन्तु लोगों का इस तरह से मानना बिल्कुल गलत है। कुत्ते एक दूसरे को अपनी आवाज सुनाते हैं और संदेश पहुँचाते हैं। वे अपनी आवाज की पहचान कराके अपने स्थान पर बुलाते हैं। अपने शरीर का दर्द महसूस कराते हैं। कुत्ते भूख, ठण्ड और दर्द की वजह से भी रोते हैं। कई लोग तो ये मानते हैं कि कुत्ता अगर रात में रोता है तो कहते हैं कि उन्हें भूत–प्रेत दिखाई दे रहा है।

कुत्ते के काटने पर पहले कहते थे कि यह पागल हो जायेगा। पानी से डर लगता था। कुत्ते के काटने पर चूने का उपयोग करते थे। किन्तु डाक्टरों ने पता लगा लिया है कि कुत्ते में रेबीज नाम के जीवाणु पाए जाते है। जिनके कारण ऐसा होता है। इसलिए अब कुत्ते के काटने पर इंजेक्शन लगवाते हैं। पहले तो 14 इन्जेक्शन पेट में लगते थे। जिससे डर कर लोग भाग जाते थे। पर अब तो एक या तीन इन्जेक्शन में काम हो जाता हैं।

शान्ति गुर्जर, शिक्षिका, उदय सामुदायिक पाठशाला फरिया

जहाँ चाह वहाँ राह

राजकुमार वीरसेन गुरूकुल के विद्यार्थियों के साथ कटहल के पेड़ के नीचे बैठा गणित के सवाल हल करने का प्रयास कर रहा था। तभी एक कटहल उसके सिर पर आकर गिरा।

''बूम!'' जब तक कोई समझ पाता वीरसेन अपना सिर पकड़कर वहीं जमीन पर लोट गया। वो तो कहो कटहल छोटा था। वरना बेचारा वीरसेन का पता नहीं क्या होता। अब वह गणित और कटहल के पेड़ का नाम सुनते ही घबराने लगा। किसी तरह गुरूजी ने ठोक पीटकर उसे वापस गणित पढ़ने के लिए बैठाया। पर जब वह दुबारा गणित पढ़ने बैठा तो किसी बच्चे ने कटहल के पेड़ पर बने मधुमक्खी के छत्ते पर पत्थर मार दिया। बाकी बच्चे तो भाग गये पर वीरसेन जब तक समझ पाता मधुमक्खियों ने उस पर आक्रमण कर दिया। गुरूजी ने तुरंत कम्बल मंगवाया और वीरसेन को ओढ़ाकर उसे वहाँ से ले गये। पर तब तक मधुमक्खियाँ उसे डंक मार चुकी थी। वीरसेन ने रोते–रोते बस एक ही बात कही कि ''मैं अब कभी गणित नहीं पढूंगा।''

दो चार दिन में वीरसेन की सूजन चली गई और वह ठीक हो गया। पर कुछ नटखट बच्चों ने उससे कहा, ''अगर वह गणित पढ़ेगा तो उसके सिर पे दुबारा कटहल गिर जाएगा और मधुमक्खियाँ भी काट खाएंगी।'' गुरूजी को जब यह बात पता चली तो उन्होने उन बच्चों को डांटा और उसके बाद वीरसेन से कहा, ''हम

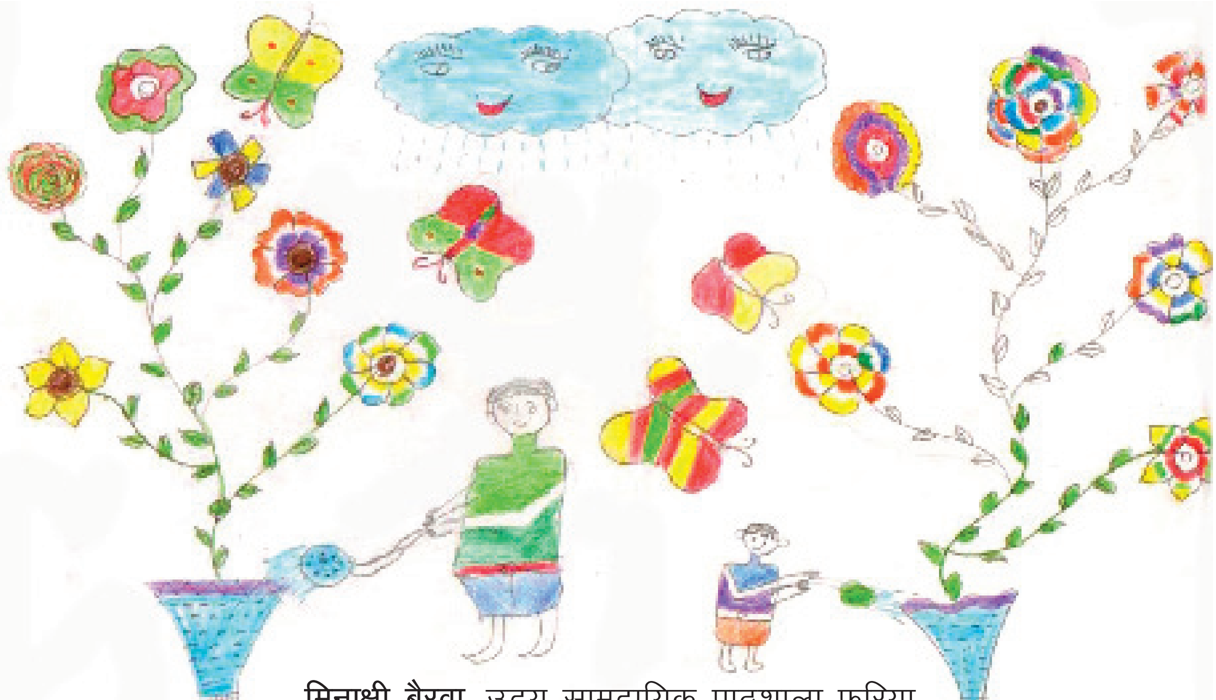

मिनाक्षी बैरवा, उदय सामुदायिक पाठशाला फरिया

पेड़ की जगह कमरे में बैठकर पढ़ेंगे।''

गुरूजी ने बहुत प्रयास किए पर वीरसेन नहीं माना। समय बीतता गया और जब वह गुरूकुल से अपनी शिक्षा पूरी करके निकला तो गणित के मामले में वह अपने चेहरे की तरह पूरा गोल था।

राजा अपने बेटे की कमजोरी जानते थे। इसलिए उन्होने वीरसेन को बुलाकर कहा, ''तुम्हें ना तो जोड़ना आता है ना घटाना, ना ही भाग देना और ना ही गुणा करना। यहाँ तक की तुम राजमहल के सदस्य तक नहीं गिन सकते।''

वीरसेन ने पूछा, ''पर पिताजी, हम हमारे राजमहल के लोग क्यों गिनेंगे, क्या उन्हे कोई चुराकर ले जा रहा है?'' बेटे की बात सुनकर राज अपना सिर पकड़कर वहाँ से चला गया। पिता के मरने के बाद वीरसेन राजा बना और उसने अपनी मदद के लिए महामंत्री को साये की तरह अपने साथ रखने लगा। महामंत्री था तो बुद्धिमान पर जैसे ही उसे वीरसेन की कमजोरी का पता चला तो उसके मन में लालच आ गया। अब तो महामंत्री तरह–तरह के बहाने बनाकर वीरसेन से पैसे ऐंठने लगा।

बात कब तक छुपती। धीरे–धीरे बात दरबार में सबको पता चल गई कि वीरसेन को बिलकुल भी गणित नहीं आती और महामंत्री गलत हिसाब बताकर इसका फायदा उठा रहा है। पर इस बात को राजा से कहे कौन? समय गुजरता रहा।

एक दिन घोड़े बेचने के लिए एक व्यापारी दरबार में आया। व्यापारी ने वीरसेन से कहा, ''महाराज मेंरे पास बेहद उम्दा नस्ल के सौ घोड़े हैं। अगर आप उन्हे खरीद ले तो आपकी सेना को बहुत फायदा होगा क्योंकि वे सभी घोड़े इतना तेज दौड़ते हैं कि आपको लगेगा कि वे उड़ रहे हैं।'' राजा का आदेष मिलते ही सेनापति कुछ और दरबारियों के साथ घोड़ों को देख कर आये। सभी को घोड़े बहुत मजबूत और आकर्षक लगे। इसलिए सभी ने खरीदने का सुझाव दिया।

वीरसेन ने व्यापारी से पूछा, ''एक घोड़े की कीमत कितनी है?'' महामंत्री के कान ये बात सुनते ही खड़े हो गये। उसके मन में तुरंत गुणा भाग चलने लगा।

व्यापारी बोला, ''महाराज, वैसे तो एक घोड़े की कीमत सौ स्वर्ण मुद्राएं हैं पर आप जो ठीक समझे वो दे दीजिये।''

वीरसेन ने सबसे नजर चुराकर महामंत्री से पूछा की सौ घोड़ों की कीमत कितनी होगी? महामंत्री ने भी महाराज के कान में बोला महाराज, बीस हजार स्वर्ण मुद्रायें होंगी। मैं अभी जाकर ले आता हूं। वीरसेन ने व्यापारी को महामंत्री से धन प्राप्त करने का आदेश दिया। कुछ देर बाद महामंत्री एक थैला लाया और व्यापारी के हाथ में देता हुआ बोला, ''ये आपके घोड़ों की कीमत....।''

व्यापारी ने थैला लिया और वीरसेन से बोला, ''अच्छा हुआ महाराज आपने सारे

घोड़े खरीद लिए। मुझे दस हजार स्वर्ण मुद्राओं की सख्त आवश्यकता थी।''

''हॉ, अच्छा है और बाकी दस भी आपके किसी काम आ जाएंगी।'' महामंत्री के पास खड़े एक मंत्री ने कहा। जिसने बीस हजार वाली बात सुन ली थी। मंत्री की बात सुनकर व्यापारी बोला, ''नहीं महाराज, एक घोड़े की कीमत सौ स्वर्ण मुद्राएं है तो सौ घोड़ों की कीमत तो दस हजार स्वर्ण मुद्राएं हुई, तो भला आप मुझे बीस हजार स्वर्ण मुद्राएं क्यों दे रहे हैं?''

वीरसेन ने आश्चर्य से महामंत्री की ओर देखा जिसके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थी। वीरसेन समझ गया कि महामंत्री ने उससे झूठ बोला है। वह गुस्से में सिंहासन से उठ खडा हुआ और बोला, ''सच्चाई क्या है महामंत्री जी?'' महामंत्री ने अपना सिर शर्म से झुका लिया।

राज, कक्षा–8, उदय सा. पाठ. जगनपुरा

सभी दरबारियों ने एक दूसरे को देखा और सोचा कि यही सही समय है महामंत्री की करतूतों के बारे में बताने के लिए, और फिर एक के बाद एक करके सभी ने महामंत्री के झूंठे गणित का पुलंदा खोलकर रख दिया।

वीरसेन चुपचाप अपना सिर पकड़कर सिंहासन पर बैठ गया। वीरसेन खुद को संयत करते हुए महामंत्री से बोला, ''आपसे ज्यादा मेरी गलती है। क्योंकि मैने आप पर आँख मूंद कर विश्वास किया। दुर्घटनाएं तो किसी के साथ भी हो सकती है। पर मैं उनका मुकाबला करने की बजाय उनसे डर कर भाग गया। पर आप आज से महामंत्री नहीं रहेंगे और दरबार में कभी नहीं आएंगे।''

व्यापारी पूरा मामला समझ गया कि इस गड़बड का कारण महाराज को गणित नहीं आना है। इसलिए वह महाराज से बोला, ''सीखने की कोई उम्र नहीं होती महाराज, आप अभी भी गणित सीख सकते हैं।''

''अरे वाह, ये तो मैने सोचा ही नहीं।'' वीरसेन खुश होते हुए बोला और कोषाध्यक्ष से बोला– कल सुबह से ही आप मुझे गणित सिखायेंगे।

''जी महाराज, मैं आपको पढ़ाने कहाँ पर आऊं?'' कोषाध्यक्ष ने कहा।

''उसी कटहल के बाग में, क्योंकि कटहल हमेशा नहीं गिरते'' कहते हुए वीरसेन ठहाका मारकर हंस दिया।

श्रोत – विष्णु गोपाल

नेहा सोनवाल, उम्र–11 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

खेल

रोजे सुबह सब खाना खा के
रोज मैदान में उतर ही जाते
एक छोटी सी गिल्ली उठाते
एक बड़ा सा डंडा उठाते
गिल्ली डंडा उठा के सारे
खेल खेलते बच्चे प्यारे
खेल खेलकर सारे बच्चे
पानी में वो कुश्ती करते
लड़ते लड़ते नहाते सारे
शाम हुए फिर मैदान में उतरे
खेल खेल कर होते मैले
थके हारे डट कर खाते
खाना खाकर सब सो जाते
सपनों में भी खेल ही खेलते

– **उदय फरिया** के छात्र

क्लब में कला

तुमको मैं एक बात बताऊँ
उदय शाला में मैं पढ़ने जाऊँ
शाला है लाखों में एक
अच्छाई में है सबसे नेक
कमरों के अन्दर बल्ब है जलते
इसमें प्यारे क्लब है चलते
क्लब के नाम है जैसे मै बोलू
खेल के क्लब में मै तो खेलू
खेल खिलाती मेरी मेम
इसमें हैं तरह तरह के गेम
ऐसी मेरी पाठशाला
चलती इसमें पाकशाला
कक्ष में करता टिम टिम बल्ब
जिसमें चलता कुकिंग क्लब
देखो तुम भी आंखें मीच
हमने बनाया अच्छा खीच
कुकिंग हमारे मन में छाई
अच्छी चीजें हमने बनाई

– **उदय फरिया** के छात्र

सुनीता,
उम्र–9 वर्ष,
समूह–संगम

हार की जीत

सुनील बैरवा, कक्षा–8,
उदय सामुदायिक पाठशाला फरिया

खड़गसिंह के खड़कने से खड़कती हैं खिड़कियां।
खिड़कियों के खड़कने से खड़कता है खड़गसिंह.....

इस जटिल उच्चारण वाले कथन को साफ और स्पस्ट बोलने की शर्त लगाते हुए अक्सर देखा और सुना होगा। पर क्या आपको पता है कि खड़कसिंह की एक कहानी भी है। प्रस्तुत है उनकी कहानी हार की जीत –

माँ को अपने बेटे और किसान को अपने लहलहाते खेत देखकर जो आनंद आता है, वही आनंद बाबा भारती को अपना घोड़ा देखकर आता था। भगवद्–भजन से जो समय बचता, वह घोड़े को अर्पण हो जाता। वह घोड़ा बड़ा सुंदर था, बड़ा बलवान भी था। उसके जोड़ का घोड़ा सारे इलाके में नहीं था। बाबा भारती उसे 'सुल्तान' कह कर पुकारते, उपने हाथ से खरहरा करते, खुद दाना खिलाते और देख–देखकर प्रसन्न होते थे। उन्होने रूपया, माल, असबाब, जमीन आदि अपना सब–कुछ छोड़ दिया था, यहाँ तक की उन्हे नगर के जीवन से भी घृणा थी। अब गाँव से बाहर एक छोटे–से मन्दिर में रहते और भगवान का भजन करते थे। ''मैं सुल्तान के बिना नहीं रह सकूंगा'' उन्हे ऐसी भ्रांती सी हो गई थी। वे उसकी चाल पर लट्टू थे। कहते, ''ऐसे चलता है जैसे मोर घटा को देखकर नाच रहा हो।'' जब तक संध्या समय सुल्तान पर चढ़कर आठ–दस मील का चक्कर न लगा लेते, उन्हे चैन न आता।

खड़गसिंह उस इलाके का प्रसिद्ध डाकू था। लोग उसका नाम सुनकर काँपते थे। धीरे–धीरे सुल्तान की कीर्ति उसके कानों में भी पहुँची। उसका हृदय उसे देखने के लिए अधीर हो उठा। एक दिन वह दोपहर के समय बाबा भारती के पास पहुँचा और नमस्कार करके बैठ गया। बाबा भारती ने पूछा, ''खड़गसिंह, क्या हाल है?''

खड़गसिंह ने सिर झुकाकर उत्तर दिया, ''आपकी दया है।''

''कहो इधर कैसे आ गए?''

''सुल्तान की चाह खींच लाई।''

''विचित्र जानवर है। देखोगे तो प्रसन्न हो जाओगे।''

''मैने भी बड़ी प्रशंसा सुनी है।''

''उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी।''

''कहते हैं, देखने में बहुत सुंदर है।''

''क्या कहना! जो उसे एक बार देख लेता है, उसके हृदय पर उसकी छवि अंकित हो जाती है।''

''बहुत दिनों से अभिलाषा थी, आज उपस्थित हो सका हूँ।''

बाबा भारती और खड़गसिंह अस्तबल में पहुँचे। बाबा ने घोड़ा दिखाया घमंड से, खड़गसिंह ने देखा आश्चर्य से। उसने सैंकड़ों घोड़े देखे थे, परन्तु ऐसा बाँका घोड़ा उसकी आँखों से कभी न गुजरा था। सोचने लगा, भाग्य की बात है। ऐसा घोड़ा खड़गसिंह के पास होना चाहिए था। इस साधु को ऐसी चीजों से क्या लाभ? कुछ देर तक आश्चर्य से खड़ा रहा। इसके पश्चात उसके हृदय में हलचल होने लगी। बालकों की–सी अधीरता से बोला, ''परंतु बाबाजी, इसकी चाल न देखी तो क्या?''

दूसरे के मुख से सुनने के बाद बाबा का मन भी अधीर हो गया। घोड़े को खोलकर बाहर गए। घोड़ा वायु वेग से उड़ने लगा। उसकी चाल को देखकर खड़गसिंह के हृदय पर सांप लौट गया। वह डाकू था और जो वस्तु उसे पसंद आ जाए उस पर वह अपना अधिकार समझता था। उसके पास बाहुबल था और आदमी भी। जाते–जाते उसने कहा, ''बाबाजी, मैं यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा।''

बाबा भारती डर गये। अब उन्हें नींद न आती। सारी रात अस्तबल की रखवाली में कटने लगी। प्रति क्षण खड़गसिंह का भय रहता, परंतु कई मास बीत गये और वह न आया। बाबा भारती कुछ असावधान हो गए और इस भय को स्वप्न के भय की तरह मिथ्या समझने लगे। संध्या का समय था। बाबा भारती सुल्तान की पीठ पर सवार होकर घूमने जा रहे थे। इस समय उनकी आँखों में चमक थी, मुख पर प्रसन्नता। कभी घोड़े के शरीर को देखते, कभी उसके रंग को और मन में फूले न समाते थे। सहसा एक ओर आवाज आई, ''ओ बाबा, इस कंगले की सुनते जाना।''

आवाज में करूणा थी। बाबा ने घोड़े को रोक लिया। देखा, एक अपाहिज वृक्ष की छाया में पड़ा कराह रहा है। बोला, ''क्यों तुम्हे क्या कष्ट है?''

अपाहिज ने हाथ जोड़कर कहा, ''बाबा, मैं दुखियारा हूँ। मुझ पर दया करो। रामावाला यहाँ से तीन मील दूर है, मुझे वहाँ जाना है। घोड़े पर चढ़ा लो, परमात्मा भला करेगा।''

''वहाँ तुम्हारा कौन है?''

''दुर्गादत्त वैद्य का नाम आपने सुना होगा। मैं उनका सौतेला भाई हूँ।''

बाबा भारती ने घोड़े से उतरकर अपाहिज को घोड़े पर सवार किया और स्वयं उसकी लगाम पकड़कर धीरे–धीरे चलने लगे। सहसा उन्हे एक झटका–सा लगा और लगाम हाथ से छूट गई। उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उन्होने देखा कि अपाहिज घोड़े की पीठ पर तनकर बैठा है और घोड़े को दौड़ाए लिए जा रहा है। उनके मुख से भय, विस्मय और निराशा से मिली हुई चीख निकल गई। वह अपाहिज डाकू खड़गसिंह था। बाबा भारती कुछ देर तक चुप रहे और कुछ समय पश्चात कुछ निश्चय करके पूरे बल से चिल्लाकर बोले, ''जरा ठहर जाओ।''

खड़गसिंह ने यह आवाज सुनकर घोड़ा रोक लिया और घोड़े की गरदन पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा, ''बाबाजी, यह घोड़ा अब न दूँगा।''

''परन्तु एक बात सुनते जाओ।'' खड़गसिंह ठहर गया।

बाबा भारती ने निकट आकर उसकी ओर ऐसी आँखों से देखा जैसे बकरा कसाई की ओर देखता है और कहा, ''यह घोड़ा तुम्हारा हो चुका है। मैं तुमसे इसे वापस करने के लिए न कहूँगा। परन्तु खड़गसिंह, केवल एक प्रार्थना करता हूँ। इसे अस्वीकार न करना, नहीं तो मेरा दिल टूट जाएगा।''

''बाबाजी, आज्ञा दीजिए। मैं आपका दास हूँ, केवल घोड़ा न दूँगा।''

''अब घोड़े का नाम न लो। मैं तुमसे इस विषय में कुछ न कहूँगा। मेरी प्रार्थना केवल यह है कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।''

खड़गसिंह का मुँह आश्चर्य से खुला रह गया। उसका विचार था कि उसे घोड़े को लेकर यहाँ से भागना पड़ेगा, परंतु बाबा भारती ने स्वयं उसे कहा कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना। इससे क्या प्रयोजन सिद्व हो सकता है? खड़गसिंह ने बहुत सोचा, बहुत सिर मारा, परंतु कुछ समझ न सका। हारकर उसने अपनी आँखें बाबा भारती के मुख पर गड़ा दी और पूछा, ''बाबाजी इसमें आपको क्या डर है?''

सुनकर बाबा भारती ने उत्तर दिया, ''लोगों को यदि इस घटना का पता चला तो वे दीन–दुखियों पर विश्वास न करेंगे।'' यह कहते–कहते उन्होंने सुल्तान की

ओर इस तरह मुँह मोड़ लिया जैसे उनका उससे कभी कोई संबंध ही नहीं रहा हो।

बाबा भारती चले गये। परंतु उनके शब्द खड़गसिंह के कानों में उसी प्रकार गूँज रहे थे। सोचता था, कैसे ऊँचे विचार हैं, कैसा पवित्र भाव है! उन्हें इस घोड़े से प्रेम था, इसे देखकर उनका मुख फूल की तरह खिल जाता था। कहते थे, ''इसके बिना मैं रह न सकूँगा।'' इसकी रखवाली में वे कई रात सोए नहीं। भजन–भक्ति न कर रखवाली करते रहे। परंतु आज उनके मुख पर दुःख की रेखा तक दिखाई न पड़ती थी। उन्हें केवल यह ख्याल था कि कहीं लोग दीन–दुखियों पर विश्वास करना न छोड़ दे। ऐसा मनुष्य, मनुष्य नहीं देवता है।

भूमिका, कक्षा–8, समूह–संगम

रात्रि के अंधकार में खड़गसिंह बाबा भारती के मंदिर पहुँचा। चारों ओर सन्नाटा था। आकाश में तारे टिमटिमा रहे थे। थोड़ी दूर पर गाँवों के कुत्ते भौंक रहे थे। मंदिर के अंदर कोई शब्द सुनाई न देता था। खड़गसिंह सुल्तान की लगाम पकड़े हुए था। वह धीरे–धीरे अस्तबल के फाटक पर पहुँचा। फाटक खुला पड़ा था। किसी समय वहाँ बाबा भारती स्वयं लाठी लेकर पहरा देते थे, परंतु आज उन्हे किसी चोरी, किसी डाके का भय न था। खड़गसिंह ने आगे बढ़कर सुल्तान को उसके स्थान पर बाँध दिया और बाहर निकलकर सावधानी से फाटक बंद कर दिया। इस समय उसकी आँखों में नेकी के आँसू थे। रात्रि का तीसरा पहर बीत चुका था। चौथा पहर आंरभ होते ही बाबा भारती ने अपनी कुटिया से बाहर निकल ठंडे जल से स्नान किया। उसके पश्चात इस प्रकार चले जैसे कोई स्वप्न में चल रहा हो, उनके पाँव अस्तबल की ओर बढ़े। परंतु फाटक पर पहुँचकर उनको अपनी भूल प्रतीत हुई। साथ ही घोर निराशा ने पाँवों को मण–मण भर का भारी बना दिया। वे वहीं रूक गए। घोड़े ने अपने स्वामी के पाँवों के चाप को पहचान लिया और जोर से हिनहिनाया। अब बाबा भारती आश्चर्य और प्रसन्नता से दौड़ते हुए अंदर घुसे और अपने प्यारे घोड़े के गले से लिपटकर इस प्रकार रोने लगे मानो कोई पिता बहुत दिन से बिछड़े हुए पुत्र से मिल रहा हो। बार–बार उसकी पीठ पर हाथ फेरते, बार–बार उसके मुँह पर थपकियाँ देते। फिर वे संतोष से बोले, ''अब कोई दीन–दुखियों से मुँह न मोड़ेगा।''

श्रोत – विष्णु गोपाल

पवन बैरवा,
उम्र–12 वर्ष, समूह–सूरज

माथापच्ची

1. मैं हूँ लाल, मेरे बच्चे लाल, लेकिन उनके बच्चे सफेद।
2. मैं जाऊँ कहीं भी बिना किराये भाड़े के।
3. रंग–बिरंगा होता हूँ, बरसात के मौसम में नाचता हूँ।
4. दूर–दूर तक जाती हूँ, छोटी दिखने लगती हूँ।
5. मैं रहता हूँ ऊँचा–ऊँचा, हर गाँव से दिखता हूँ, छापर जैसा लगता हूँ।

खुशबू मीना, समूह–उजाला, कक्षा–8

हीहीही ठीठीठी

1. सोनू : राजू तुमने इतने छोटे बाल क्यों कटवा लिये?

राजू : बाल वाले के पास पाँच रूपये खुल्ले नहीं थे तो मैने उससे पाँच रूपये के बाल और कटवा लिये।

2. एक तोता स्कूटर वाले से टकराकर बेहोश हो गया। तो स्कूटर वाले ने उसे उठाकर एक पिंजरे में डाल दिया। जब तोते को होश आया तो उसने खुद को पिंजरे में देखा तो चौंक कर बोला, ''हाय राम! जेल हो गई, स्कूटर वाला मर गया क्या?''

दीपक, उम्र–8 वर्ष, समूह–संगम

कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ
बात में जोड़ो बात, गीत में कड़ी लगाओ

धनवंती, उम्र–11 वर्ष,
उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

प्यारी सी एक गुड़िया आई
अपना पर्स साथ में लाई.........

दीपिका मीना, उम्र–12 वर्ष, समूह–सितारा द्वारा शुरू की गई इस कविता को पूरा करके मोरंगे को भेजें।

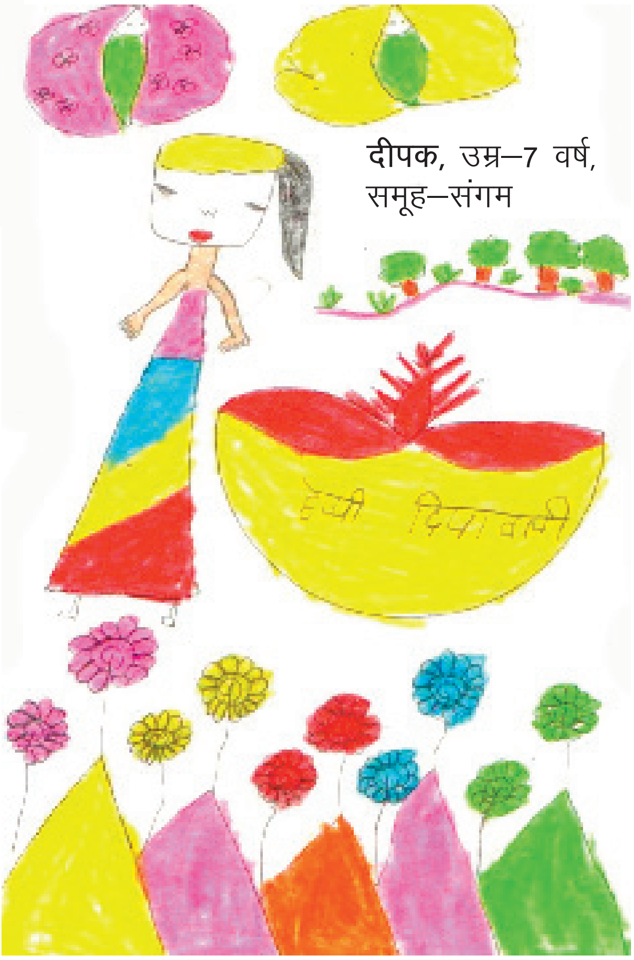

दीपक, उम्र–7 वर्ष,
समूह–संगम

एक गाँव था। उस गाँव में एक गरीब धोबी रहता था। वह धोबी रोज कपड़े धोया करता था। एक दिन जब वह कपड़े धोने लगा तो उसे एक कुर्ते में सोने की अगूंठी मिली। अंगूठी देखकर वह चक्कर में पड़ गया.......

रामवीर गुर्जर, समूह–झरना, उम्र–10 वर्ष द्वारा शुरू की गई कहानी को पूरा करके मोरंगे को भेजें।

पहेलियों के ज़वाब –

1. अनार   2. सपना   3. मोर   4. पतंग   5. पर्वत

रिंकु मीना, कक्षा–8, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा